यू.एस.एम. पत्रिका

ISSN 2321-7022

साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिकी मासिक

अतिरिक्त विशेषांक 2025 ■ 1984 से निरन्तर प्रकाशित

तमिलनाडु विशेषांक

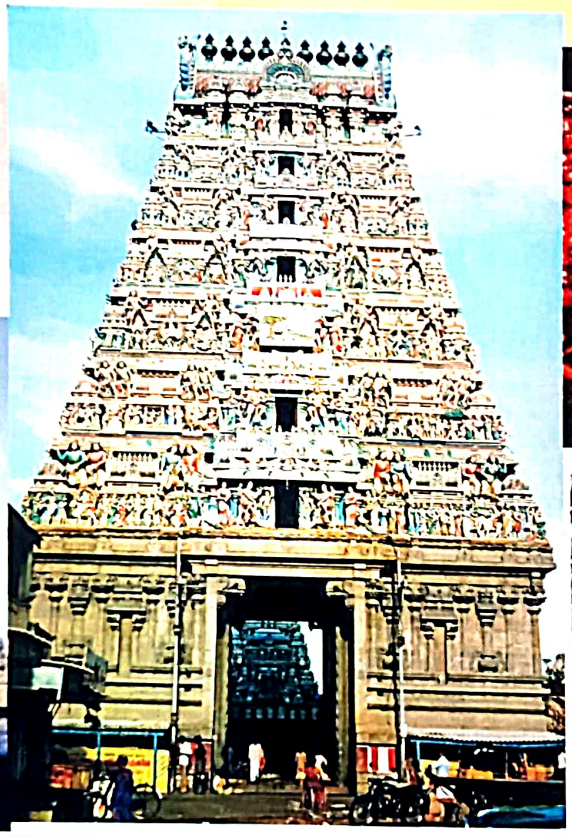

अतिथि संपादक
डॉ.सुनीता जाजोदिया

सम्पादक : उमाशंकर मिश्र ■ कार्यकारी संपादक : विकास मिश्र

अन्तर्गत

1.	उत्तर-दक्षिण को जोड़ने का प्रयास हैं ये विशेषांक	-संपादकीय	3
2.	बेजोड़ तमिलनाडु	-अतिथि संपादक	4
3.	तमिलनाडु : ऐतिहासिक-भौगोलिक परिचय	-	6
4.	भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में तमिलनाडु का योगदान	- डॉ. चेल्लम थिरुवेंगदम	9
5.	सुन्दर सुमधुर तमिलनाडु	-आर.जे. संतोष कुमार	11
6.	कांचीपुरम : एक अद्‌भुत नगरी	-डॉ. नागेश्वर राव दण्डिभोटला	13
7.	तमिलनाडु के संत	-आर. पार्वती	15
8.	भक्ति की शक्ति और आर्थिक कड़ी-तमिलनाडु के मंदिर	-डॉ. पी. एस. विजयराघवन	20
9.	उत्तरायण का पर्व मकर संक्रांति : पर्व एक, नाम अनेक	-डॉ. पद्‌मावती	22
10.	तमिलनाडु के महान व्यक्तित्व	-डॉ. नागराजन गुरुमूर्ति	24
11.	चैन्नई के प्रमुख समाजसेवी : श्री जयगोपाल जी गाड़ोदिया	-अशोक केडिया	29
12.	तमिलनाडु में हिंदी विरोध : तब और अब	-रमेश गुप्त नीरद	32
13.	तमिलनाडु में हिंदी पत्रकारिता	-डॉ. सुनीता जाजोदिया	35
14.	तमिल प्रदेश में लिपि और भाषा के प्राचीन संदर्भ	-डॉ. दिलीप धींग	36
15.	भाषा-सेतु : डॉ. एम. गोविंदराजन	-डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन	37
16.	तमिलनाडु के हिंदी प्रचारक	-डॉ. वी.गीता मालिनी	38
17.	तमिलनाडु के हिंदी लेखक	-डॉ. सुनीता जाजोदिया	39
18.	तमिलनाडु में राजभाषा हिंदी : दशा-दिशा	-डॉ. वासुदेवन 'शेष'	40
19.	रावण का दशहरा (व्यंग्य)	-प्रहलाद श्रीमाली	41
20.	ढूंढ उस शिखर को, जिससे चिपक सके (व्यंग्य)	-बी.एल. आच्छा	43
21.	एक और नई कहानी (कहानी)	-डॉ. पद्‌मावती	44
22.	मेला (कहानी)	-डॉ. सुनीता जाजोदिया	50
23.	दौड़ाहा (कहानी)	-सुधा त्रिवेदी	52
24.	झरोखों में उजास (कहानी)	-रोचिका अरुण शर्मा	57
25.	तमिलनाडु में हिंदी पठन-पाठन	-डॉ. निशा मुरलीधरन	63

कविताएँ : डॉ. सुमन अग्रवाल, रमेश गुप्त नीरद, शोभा चोरड़िया, ईश्वर करुण, डॉ. एस. प्रीतिलता और श्री अलंकर आच्छा

विशेष सूचना

रचनाकार अपनी रचनाएं भेजते समय इस बात का विशेष ध्यान रखें कि उसका कोई भी अंश किसी भी प्रकार से विवादित न हो। यदि ऐसा होता है तो उसका पूरा व एकमात्र उत्तरदायित्व रचनाकार का ही होगा, पत्रिका का नहीं। इसके बावजूद यदि कोई विवाद उत्पन्न होता है तो उसका न्यायक्षेत्र केवल गाजियाबाद रहेगा ।

-संपादक

भाषा–सेतु : डॉ.एम.गोविंदराजन

–डॉ.पूर्णिमा श्रीनिवासन

तमिलनाडु में हिंदी के सही प्रचार और शिक्षण के अभाव के कारण दक्षिण के अन्य प्रान्तों की तुलना में हिंदी विद्वानों और लेखकों की संख्या नगण्य है। ऐसी परिस्थिति में हिंदी में लिखने वाले ठेठ तमिल भाषी लोग विरले मिलते हैं। ऐसे विरलों में श्री शौरिराजन, डॉ. एम शेषन, डॉ. पी.के. बालसुब्रमण्यम, डॉ. एम. गोविंदराजन, श्री टी.ई.एस. राघवन जैसे कुछ ही उल्लेखनीय लोग मिलते हैं जिनकी मातृभाषा तमिल है। इन लोगों के द्वारा मौलिक रचनाओं के साथ–साथ हिंदी में काफी अनुवाद का काम भी हुआ है।

इस लेख में सुप्रसिद्ध अनुवादक डॉ. एम. गोविंदराजन के योगदान के बारे में प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है। आपका जन्म तमिलनाडु के ऐतिहासिक एवं ललित कलाओं के लिए सुप्रसिद्ध शहरतंजाऊर में13 जुलाई 1944 में हुआ। आप बचपन से ही सार्वजनिक कार्यों में बहुत रुचि लेते थे। कालजयी साहित्यकार डॉ. गोविन्दराजन 81वर्ष के युवक हैं। हिंदी, तमिल दोनों भाषाओं में डॉ. गोविन्दराजन की पचास से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। आपका साहित्यिक सेवा काल पचपन साल से अधिक है। आपके साहित्यिक योगदान निमनानुसार हैं–

1.बाल साहित्य :

उन्होंने साहित्यिक क्षेत्र में बाल साहित्यकार के रूप में ही प्रवेश किया। सन् 1966 में ही 'तमिल कविता की दो किताबों की रचना कर प्रकाशित किया। उनका ध्यान अनुवाद की ओर जाने लगा। 1971 में ही 'आदर्श लड़का', नामक लघु उपन्यास का हिंदी अनुवाद प्रकाशित किया।

2. तमिल से हिंदी अनुवाद :

संगम साहित्य के 18 ग्रंथों का, याने हिंदी पद्यानुवाद का कार्य आपके नेतृत्व में पूरा हुआ है। इसी तरह तिरुक्कुरल का हिंदी में व्याख्या सहित पद्यानुवाद आपने किया है। तमिल के पंच महाकाव्यों समकालीन तमिलनाडु के प्रसिद्ध तमिल साहित्यकारों की रचनाएँ आदि का हिंदी में अनुवाद किया है।

3.हिंदी से तमिल अनुवाद :

आपने समकालीन हिंदी साहित्य के विभिन्न कहानीकारों की हिंदी कहानियों का तमिल में 'सेट्रिल मलर्न्द सेंतामरै' के नाम से अनुवाद किया है।

आध्यात्मिक क्षेत्र में आपने तुलसीदास के कुल 7 कृतियों का तमिल में अनुवाद किया है। आपके 'रामचरित मानस' का तमिल अनुवाद चेन्नै के 'वर्द्धमानन पदिप्पगम्' द्वारा प्रकाशित है। 'विनयपत्रिका' का अनुवाद चेन्नै के 'वानदि पदिप्पगम्' द्वारा प्रकाशित है। आपने कवि कोकिल विद्यापति के मैथिली पदावलियों को भी तमिल में अनुवाद किया है।

4.मौलिक रचनाएं : 'सरल तमिल शिक्षण', 'श्री शक्ति तमिल मार्ले' 'तमिल हिंदी सुमन माला,' 'तमिल साहित्य का संक्षिप्त इतिहास' 'डॉ. गोविन्दराजन का निबंध संकलन', आदि आपकी मौलिक रचनाएँ हैं। आप ने तमिल में 'गोविन्दन इयट्रिय कुरु रामायण' अर्थात 'गोविन्दन द्वारा रचित लघु रामायण', जोकि पद्य में लिखी लघु रामायण है।

5.पत्रकारिता : पत्रकारिता के क्षेत्र में आपका विशेष योगदान रहा है। आपातमिल–हिंदी द्विभाषिक पत्रिका 'आदान–प्रदान' नामक त्रैमासिक पत्रिका के संपादक और प्रकाशक रहे। इस पत्रिका में आपके द्वारा लिखित संपादकीय उत्तर भारत में बहुत प्रसिद्ध हैं। इसके अलावा 'सूर सौरभ' नामक त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन भी आपने किया।

"भाषा का महत्व अभी हम लोगों ने समझा नहीं है। भाषा ही राष्ट्र का जीवन है। भाषा को ही लेकर विदेशों में अनेक राष्ट्रीय आंदोलन खड़े हुए हैं। आयरलैंड की सिनफिन पार्टी भाषा के ही प्रश्न को लेकर बनी है। हमको भी देश के जीवन के लिए सारे भारतवर्ष में एक राष्ट्रीय भाषा हिंदी का प्रचार करना है।"

–राजर्षि पुरुषोत्तमदास टंडन